B.A. (Part-III) Examination, 2019

हिन्दी साहित्य-तृतीय वर्ष (प्रथम प्रश्न पत्र)

(आधुनिक काव्य)

For Non-Collegiate Candidates

Time allowed : Three Hours　　　　Maximum marks : 100

किसी भी परीक्षार्थी को पूरक उत्तर-पुस्तिका नहीं दी जायेगी। अत: परीक्षार्थियों को चाहिए कि वे मुख्य उत्तर-पुस्तिका में ही समस्त प्रश्नों के उत्तर लिखें।

किसी भी एक प्रश्न के अन्तर्गत पूछे गये विभिन्न प्रश्नों के उत्तर, उत्तर-पुस्तिका में अलग-अलग स्थानों पर हल करने के बजाय एक ही स्थान पर हल करें।

प्रश्नों के उत्तर लिखने से पूर्व प्रश्न-पत्र पर रोल नम्बर अवश्य लिखें। सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न हेतु निर्धारित अंक उसके सामने अंकित हैं।

1. निम्नलिखित अवतरणों में निहित भाव सौन्दर्य को उद्घाटित करते हुए इनकी सप्रसंग व्याख्या कीजिए-　　　　3+4+3=10

(क) आ के बैठी निज सदन की मुक्त ऊँची छतों में।
मोखों में औ पथ पर बने दिव्य वातायनों में।
चिन्तामग्ना विवश विकला उन्मना नारियों की।
दो ही आँखें सहस बन के देखती पन्थ को थीं॥

आ के कागा यदि सदन में बैठता था कहीं भी।
तो तन्वंगी उस सदन की यों उसे थी सुनाती।
जो आते हो कुँवर उड़ के काक तो बैठ जा तू।
मैं खाने को प्रतिदिन तुझे दूध औ भात दूंगी॥

अथवा

यदि वे चल आये हैं इतना,
तो दो पद उनको है कितना ?
क्या भारी वह, मुझको जितना ?
पीठ उन्होनें फेरी!
रे मन, आज परीक्षा तेरी।

सब अपना सौभाग्य मनावें,
दरस-परस, नि:श्रेयस पावें।
उद्धारक चाहें तो आवें,
यहीं रहे यह चेरी।
रे मन, आज परीक्षा तेरी।

(ख) पतझड़ था, झाड़ खड़े थे।
सूखी सी फुलवारी में
किसलय नव कुसुम बिछाकर
आये तुम इस क्यारी में।

शशि मुख पर घूंघट डाले
अंचल में दीप छिपाये
जीवन की गोधूली में
कौतूहल से तुम आये।

अथवा

कंकाल-जाल जग में फैले
फिर नवल रुधिर-पल्लव लाली!
प्राणों की मर्मर से मुखरित
जीवन की मांसल हरियाली!

मंजरित विश्व में यौवन के
जग कर जग का पिक, मतवाली
निज अमर प्रणय-स्वर मदिरा से
भर दे फिर नव युग की प्याली!

(ग) बावरे अहेरी रे http://www.uoronline.com
कुछ भी अवध्य नहीं तुझे, सब आखेट है
एक बस मेरे मन-विवर में दुबकी कलौंस को
दुबकी ही छोड़कर क्या तू चला जाएगा ?
ले, मैं खोल देता हूँ कपाट सारे
मेरे इस खंडहर की शिरा-शिरा छेद दे आलोक की अनी से अपनी,
गढ़ सारा ढाहकर ढूह भरकर दे :

अथवा

और जाने क्यों,
मुझे लगता कि ऐसा ही अकेला नीला तारा,
तीव्र-गति,
जो शून्य में निस्संग,
जिसका पथ विराट
वह छिपा प्रत्येक उर में,
प्रति हृदय के कल्मषों के बाद
जैसे बादलों के बाद भी है शून्य नीलाकाश!

(घ) जबकि मैं जानता हूँ कि 'इनकार से भरी हुई एक चीख'
और 'एक समझदार चुप'
दोनों का मतलब एक है–
भविष्य गढ़ने में 'चुप' और 'चीख'
अपनी–अपनी जगह एक ही किस्म से
अपना–अपना फ़र्ज अदा करते हैं।

अथवा

गूंगे निकल पड़े हैं, जुबाँ की तलाश में
सरकार के खिलाफ़ ये साज़िश तो देखिए।
बरसात आ गई तो दरकने लगी जमीन,
सूख मचा रही ये बारिश तो देखिए।
उनकी अपील है कि उन्हें हम मदद करें,
चाकू की पसलियों से गुज़ारिश तो देखिए।

2. 'साकेत' और 'यशोधरा' के आधार पर मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में चित्रित 'स्त्री–औदात्य' को स्पष्ट कीजिए। 15

अथवा

छायावादी काव्यधारा के परिप्रेक्ष्य में सुमित्रानंदन पंत की कविता के भाव व शिल्पगत वैशिष्ट्य को प्रकट कीजिए। 8–7=15

3. मानव जीवन की प्रेरक शक्ति और सौन्दर्य पुंज के रूप में ज़यशंकर प्रसाद के काव्य में व्यक्त नारी स्वरूप को, उचित उद्धरण देते हुए स्पष्ट कीजिए। 15

अथवा

'नई कविता' के प्रतिनिधि कवि के रूप में 'अज्ञेय' की काव्य चेतना को उद्घाटित कीजिए। 15

4. मुक्तिबोध की काव्यगत विशेषताओं की विवेचना कीजिए। 15

अथवा

हिन्दी कविता में 'दुष्यंत' का यथोचित स्थान निर्धारित करते हुए उनकी हिन्दी गज़लों की विशेषताओं को प्रकट कीजिए। 6+9=15

5. किन्हीं दो पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए– 7½+7½=15

(i) द्विवेदी युगीन काव्य में राष्ट्रीयता

(ii) छायावादी काव्य का सांस्कृतिक मूल्य

(iii) प्रगतिवादी काव्यधारा का हिन्दी कविता के विकास में योगदान और सीमाएँ

(iv) नई कविता की प्रमुख प्रवृत्तियाँ